Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 10 | Issue : 10 | October 2024

सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव

डॉ. राज कुमार

एसोसियेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वल्लभ राजकीय महाविद्यालय, मण्डी (हि. प्र.), जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश

ABSTRACT

सोशल मिडिया जनसंचार के क्षेत्र का नया किन्तु एक सशक्त माध्यम है जिसके प्रभाव से संसार में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। यह अपने जन्म से लेकर अब तक स्वयं भी परिवर्तनशील है और अपने साथ दुनिया की सोच, रहन–सहन, व्यवहार व कार्यशैली आदि को भी निरन्तर परिवर्तित करता चला आया है। यह बदलाव लाभ व हानि दोनों अपने साथ समेटे हुए है। इससे युवा पीढ़ी सबसे अधिक प्रभावित हुई है। सोशल मिडिया ने इस पीढ़ी को दुनिया से जुड़ना सिखाया किन्तु सोशल मिडिया के विभिन्न मंचों पर उपलब्ध जानकारियाँ व आंकड़ों की परिशुद्धता का आकलन करना असम्भव है। यहाँ प्राप्त जानकारियाँ भ्रामक हो सकती हैं, उन्हें तोड़–मरोड़ कर और उनके स्वरूप को बदल कर उनका दुरुपयोग भी किया जा सकता है। यही नहीं किसी भी वीडियो और फोटो को एडिट करके अफवाह व दंगे भड़काये जा सकते हैं। इसी तरह साइबर अपराध सोशल मिडिया से जुड़ी हुई सबसे बड़ी समस्या है।

सोशल मिडिया का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। लोग इसकी लत से अवसाद, चिन्ता व अकेलेपन के शिकार हो रहे हैं। यहाँ तक की हमारे सामाजिक सम्बन्ध भी इस व्यसन की भेंट चढ़ रहे हैं। बहुत से लोग अपनी निजी जानकारियों को सोशल मिडिया प्लेटफॉर्म पर साझा कर अपनी निजता खो बैठते हैं। यही नहीं ऑनलाइन ठगी और उत्पीड़न आज आम बात हो गयी है। इसलिये आज युवाओं के साथ–साथ हम सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है तथा इन दुष्प्रभावों से बचने के लिये सोशल मिडिया का संतुलित और जिम्मेदारी से उपयोग करना अति महत्त्वपूर्ण है।

KEYWORDS: जनसंचार, जनसंवाद, आकलन, अप्रत्याशित, अश्लीलता, सकारात्मक, नकारात्मक, दुरुपयोग, समाजीकरण।

शोध पत्र

आज कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट व डिजिटलीकरण का युग है। यह विज्ञान और तकनीक की देन है जिसके परिणामस्वरूप हमारे रहन–सहन व सोच–विचार में परिवर्तन आया है। यही नहीं हमारे काम करने के तौर–तरीके व हमारे व्यवहार में भी अन्तर आया है। यह बदलाव विकासशील देशों की अपेक्षा विकसित राष्ट्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस बदलाव में मुख्य भूमिका सोशल मीडिया की है जो लोगों को आपस में जुड़ने का एक विस्तृत प्लेटफॉर्म प्रदान करता है। आरम्भिक दिनों में सोशल मीडिया से मिडिया विशेषज्ञों को काफी उम्मीदें थी जो समय के साथ–साथ धूमिल होती गयी। जैसे–जैसे सोशल मीडिया का दायरा बढ़ता जा रहा है इसके भिन्न–भिन्न पहलू सामने आ रहे हैं जो न पूरी तरह सकारात्मक हैं और न ही पूरी तरह नकारात्मक।

"15 अगस्त, 1995 में विदेश संचार निगम लिमिटेड ने साइबर स्पेस यानी इंटरनेट की दुनिया को भारत के लोगों के लिए खोला था। तब के डायलअप कनेक्शन से अब 4जी और 5जी तक इंटरनेट ने भारत में लम्बा और दिलचस्प सफर तय किया है। इस क्रम में इंटरनेट के बारे में तमाम अनुमान और आकलन लगातार गलत साबित होते चले गये हैं। टेक्स्ट खासकर छपे हुए शब्दों की दुनिया लगातार सिकुड़ती चली गयी और विडियो ने तेजी से पैर पसार लिये। शुरुआती उत्साह की जगह चिन्ताओं और समस्याओं ने ले ली।"[1]

सोशल मीडिया वास्तव में जनसंचार या जन संवाद का एक माध्यम है। आज इंटरनेट पर अनेक प्रकार की वेबसाइट और ऐप उपलब्ध हैं जो लोगों को आपस में जोड़ती हैं। इसका क्षेत्र अति व्यापक है जो सभी प्रकार की सकारात्मक शिक्षा व ज्ञान के साथ–साथ नकारात्मकता को भी अपने भीतर समेटे हुआ है। यद्यपि यह एक नया विषय है तथापि पिछले कुछ वर्षों में इसके उपभोक्ताओं में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं में एकाएक वृद्धि का मुख्य कारण रिलायंस टेलिकॉम कम्पनी है जिसने लगभग दो वर्ष तक मुफ्त में इंटरनेट की सेवा प्रदान की। अर्थात् पहले लोगों को इंटरनेट का आदि बनाया फिर शुल्क वसूलना आरम्भ किया।

सोशल मीडिया जनसंचार के क्षेत्र में एक नया विषय है। "सोशल मीडिया को उस बच्चे की तरह माना जा सकता है जो उम्र और अनुभव के लिहाज से तो बच्चा ही है, लेकिन इसका वजन और ताकत किसी महाबली से कम नहीं है। बल्कि विस्तार और अच्छे–बुरे प्रभाव की दृष्टि से, बाकि जनसंचार माध्यम तेजी से उसके सामने बौने साबित होते जा रहे हैं।"[2] इस नवीन साधन का विश्व, देश, समाज, राजनीति, बाजार, शिक्षा, मानवीय सम्बन्धों, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य आदि पर क्या प्रभाव पड़ा, यह एक विचारणीय प्रश्न है। विश्व में जब भी कुछ नया घटित होता है तो हम भारतीय बिना विचारे उसका अन्धानुकरण करते हैं। सोशल मीडिया भी इसी प्रकार की एक घटना है जिसने भारतीय समाज के चेहरे व चरित्र को बदल कर रख दिया है।

सोशल मीडिया भी अन्य मीडिया की ही भान्ति जनसंवाद का एक सक्षम माध्यम है। आज के युग में इसका प्रयोग आपसी बातचीत, उत्पाद बेचने, विज्ञापन प्रसारित करने, राजनीतिक विचार–विमर्श व चुनाव प्रचार आदि के लिये किया जा रहा है जोकि इसके सकारात्मक पक्ष है। इसके अतिरिक्त मौब लिंचिंग अर्थात् भीड़ के द्वारा हिंसा

Copyright© 2024, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

भड़काने, झूठी खबरे फैलाने, राष्ट्र व समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण व आपसी भाईचारे को नष्ट करने, किसी धर्म व सम्प्रदाय के विरूद्ध दुष्प्रचार करने, जालसाजी का दुष्चक्र बुनने आदि के लिये भी इसका प्रयोग किया जा रहा है जोकि इसके नकारात्मक पहलू हैं।

आज युवाओं द्वारा टिकटॉक और यू–ट्यूब पर विडियो रील बनाने व प्रसिद्ध होने के लिये कई तरह की बेवकूफियाँ की जा रही है जिसमें अश्लीलता फैलाने व गाली–गलौच पूर्ण भाषा के प्रयोग से भी परहेज नहीं किया जा रहा है। प्रमाण के लिये ऐसे विडियो इंटरनेट पर देखे जा सकते है। कुछ लोग बिना किसी जानकारी व डिग्री के डॉक्टर, आयुर्वेदिक वैद्य, अध्यापक, इंजीनियर, मकैनिक, टेक गुरु, मार्गदर्शक, दार्शनिक, धर्म व्याख्याता, समस्याओं के निदानकर्त्ता और न जाने क्या–क्या बन बैठे हैं। करोना महामारी के दौरान एक सोशल मीडिया वैद्य ने तो निम्बू के रस की तीन बूंदे नाक में डाल कर उपयोग करने से इस महामारी से निपटने का अचूक उपाय बताया, जिसका कुछ लोगों ने तो प्रयोग भी शुरू कर दिया था। इस सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर लोग न जाने क्या–क्या बन बैठे हैं और न जाने क्या–क्या बनेंगे अभी। इसलिये समय रहते इसको कठोर नियमों के दायरे में बान्धने की आवश्यकता है।

आज के समय में सोशल मीडिया हम सभी की जरूरत बन चुका है। इसका उचित और संयमित उपयोग किसी वरदान से कम नहीं है। यह सरकार की आँखें खोलने व जनता को जागरूक करने का एक सशक्त माध्यम है। इसी ऑनलाइन मंच अर्थात् फेसबुक, ट्विटर, व्हट्सऐप, इंस्टाग्राम आदि ने आम लोगों को विश्व से जुड़ना सिखाया है जिसके फलस्वरूप हम अपने पसंदीदा मुद्दों पर अपनी राय बेवाकी से साझा करने लगे हैं। "इंटरनेट आज ऐसी शक्ति बन गया है, जिसकी कोई अनदेखी नहीं कर सकता। मुद्दे चाहे कोई भी हों अधिकारियों के साथ स्थानीय, राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों पर लाबिंग हो या भ्रष्टाचार के मामले में शीर्ष लोगों को बेनकाब करना हो, स्वयंसेवी संगठनों को इंटरनेट से काफी लाभ मिला है। मिसाल के तौर पर अन्ना हजारे और अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में चले भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन में सोशल साइटस की भूमिका रही है।..... बोस्निया हर्जोगोविना में नरसंहार, दक्षिण एशिया में किसान आन्दोलन, 1999 में सिएटल और अन्य शहरों में डब्लूटीओ के खिलाफ आन्दोलन, अफगानिस्तान, इराक और लीबिया में अमेरिकी हमला और लोकतन्त्र समर्थकों के चीन और म्यांमार में दमन जैसी घटनाओं का सच दुनिया के सामने लाने में सोशल एक्शन ग्रुप्स और गैर सरकारी संगठनों ने अहम् भूमिका निभायी।"[3] इसमें समाज के पिछड़े, दबे–कुचले व शोषित वर्ग की आवाज बनकर उभरने की भी क्षमता है। यही नहीं सोशल मीडिया से युवाओं को नये रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए है। समाज में जागरूकता फैलाने व रोजमर्रा की सूचनाएं प्राप्त करने में भी यह मंच अपनी अहम् भूमिका निभाता है। लेकिन इसका अनुचित और असंयमित प्रयोग हमें मानसिक रोगी बना सकता है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिये युवा पीढ़ी को जागरूक करना अतिआवश्यक है। यह सोशल मीडिया का ही दुष्प्रभाव है कि बाह्य जिंदगी में सैकड़ों अथवा हजारों लोगों से जुड़ा हुआ व्यक्ति अक्सर समाज में अकेला पाया जाता है। बर्लिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लूस ब्रिंग ने अपने एक महत्वपूर्ण शोध में कहा है, ''समाज पर इंटरनेट की सूचना तंत्र का प्रभाव हर क्षण बढ़ता जा रहा है तथा इसके अच्छे तथा बुरे दोनों तरह के नतीजे दुनिया को चौंकाने वाले नजर आ रहे हैं। इंटरनेट ने लोगों को अलग–थलग करना भी शुरू कर दिया है।"[4]

सोशल मिडिया ने अभिव्यक्ति की आजादी को एक नया आयाम प्रदान किया है। आज लोग उपलब्ध ऑनलाइन मंच पर खुलकर, बिना किसी डर के अपने विचार प्रकट करते हैं, किन्तु जहाँ आजादी है वहाँ दुरुपयोग की भी सम्भावना अधिक बनी रहती है। इसलिये इसके दुष्प्रभावों की चर्चा भी अनिवार्य है। आज सोशल मिडिया के हो रहे दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण बना दिया है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक समरसता को हानि पहुँच रही है और समाज को बाँटने वाली सोच को बढ़ावा मिल रहा है।

''मिडिया का प्रभाव अलग–अलग लोगों के लिये अलग–अलग है। मनोवैज्ञानिक के लिये मिडिया के प्रभाव का मतलब मनोवैज्ञिनक प्रभाव होगा। इसी तरह समाजशास्त्री इसका अर्थ सामाजिक, राजनीतिशास्त्री राजनीतिक और अर्थशास्त्री आर्थिक अर्थ लेगा। उपदेशक के लिये इसके 'नैतिक' अर्थ होंगे और विज्ञापनकर्मी के लिये इसके मायने बाजार से जुड़े होंगे। अभिभावकों की चिंता यह है कि उनका बच्चा टेलिविजन और मोबाइल ऐप्स पर हद से ज्यादा समय क्यों गुजार रहा है और कहीं इसका गलत असर उनकी मनोवृत्ति और व्यवहार पर न पड़ जाये। शिक्षकों की परेशानी यह कि कहीं इंटरनेट में मौजूद भ्रामक जानकारियों का ढेर बच्चों का करियर न बिगाड़ दे। इन सबके बीच में पुलिस भी समाज में बढ़ रही हिंसा की जिम्मेदारी मीडिया के सिर मढ़ देती है। कहने का अर्थ यह है कि मिडिया का असर जानने से पहले अलग–अलग दृष्टिकोण की तहकीकात की जरूरत है।"[5] "इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के विस्तार से पोर्नोग्राफी या कामुकता का व्यापक प्रसार हुआ है, जिससे स्त्रियों के प्रति हिंसा व अत्याचार को बढ़ावा मिला है और उनकी इमेज को धक्का पहुँचा है। इन माध्यमों से स्त्रियों के चरित्र और चित्रों का कैसा प्रदर्शन होता है, यह किसी से छिपा नहीं है।"[6] ''गूगल जैसे सर्च इंजन आपकी निजता के अधिकार का उल्लंघन कर आपके द्वारा की गयी खोज का इतिहास आपके ईमेल के साथ दो साल तक सुरक्षित रखते हैं और इसका व्यावसायिक लाभ उठाते हैं। इनके जरिये बाजार के लिये डॉटा बेस बनाया जाता है और सर्च इंजन पर खोज के इतिहास के आधार पर ही सूचनाएं प्रस्तुत की जाती हैं।"[7]

सोशल मिडिया का जन्म एक जैसी रुचि व सोच रखने वाले को एक साथ लाने व उनके बीच संवाद स्थापित करवाने के उद्देश्य से हुआ है। ''फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग को फेसबुक बनाने का आइडिया ही इसलिये आया क्योंकि उन्होंने पाया कि हार्वर्ड नेटवर्क पर जब छात्रों ने अपनी जानकारियाँ शेयर की तो उन्हें लेकर कैम्पस में जबरदस्त चर्चायें शुरू हो गयी। यह चर्चा इसलिये हो रही थी क्योंकि हार्वर्ड नेटवर्क से वही लोग जुड़े थे, जिनकी निजी जिन्दगी में भी एक–दूसरे में दिलचस्पी थी। ऐसे लोग एक–दूसरे के बारे में जानने तथा इस तरह मिली जानकारियों को एक–दूसरे के साथ बाँटने में रुचि लेते है।"[8] किसी व्यक्ति के विचार निर्माण में भी सोशल मिडिया अपनी अहम् भूमिका निभाता है। जैसे यदि आप सनातन धर्म के समर्थक है और यदि आपने इससे सम्बन्धित कोई लाइक या

जानकारी अथवा विचार सोशल मिडिया पर साझा किये हैं तो आपकी टाईमलाइन पर ऐसे मिलते–जुलते विचारों की बाढ़ आ जायेगी। आप किसी भी विषय पर कितना ही बेतुका क्यों न सोचे सोशल मिडिया में आपको आपके विचारों के समर्थक मिल ही जायेंगे। मुमकिन है कि आप अपने विचारों का समर्थन पाकर उसी को सत्य मानने लगे। इस प्रकार हमारी बेतुकी व अनुचित सोच परिपक्व हो जाएगी जो स्वयं के व्यक्तित्व व समाज दोनों के लिये हानिकारक होगी।

सोशल मिडिया में भड़काऊ सामग्री की भी कमी नहीं है जो आज के युवा वर्ग को गुमराह करने का कार्य कर रही है। ''सिडनी यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्त्ताओं ने सोशल मिडिया के दुष्प्रभावों को छः समूहों में बाँटा हैः– 1) कॉस्ट ऑफ सोशल एक्सचेंज – इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक नुकसान जैसे कि अवसाद, चिंता, ईर्ष्या तथा समय, ऊर्जा व पैसे की बर्बादी आदि शामिल हैं। 2) गुस्सा दिलाने वाले कंटेंट – इसमें हिंसात्मक और नफरत फैलाने वाले कंटेंट साझा करने वाले यूजर शामिल हैं। 3) निजता सम्बन्धी चिन्ताएं – इसके अन्तर्गत किसी तीसरी पार्टी के द्वारा निजी जानकारी के दुरुपयोग की चिन्ता को शामिल किया गया है। 4) सुरक्षात्मक खतरे – में धोखाधड़ी के खतरे और 5) साइबर बुलिंग – के अन्तर्गत दुर्व्यवहार, झूठ, स्टॉकिंग, अफवाह आदि को शामिल किया है। इसके अलावा छठी श्रेणी में सोशल मिडिया के इस्तेमाल से काम के प्रदर्शन में होने वाली कमी आती है।"[9] इसके इस्तेमाल के दुष्प्रभाव सिर्फ मानसिक सेहत से ही नहीं जुड़े है, बल्कि इससे हमारे काम करने की क्षमता भी प्रभावित हो रही है।

रोजगार, मँहगाई, भ्रष्टाचार आदि मुद्दों की चर्चा और उनके उपायों के स्थान पर आज धर्म के नाम पर राजनीति की जा रही है। इस प्रकार की राजनीति में सोशल मिडिया खाद का काम कर रहा है। मॉब लिंचिंग जैसी घटनाएँ इसी प्रकार की तुच्छ राजनीति का परिणाम है। ''नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के इंस्टिट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज द्वारा 2018 में प्रकाशित एक शोध पत्र में यह जानकारी दी गयी कि भारत में एक वर्ष में 28 लोगों की हत्या पीट–पीट कर इसलिये कर दी गयी, क्योंकि उनके बारे में सोशल मिडिया में अफवाहें फैली हुई थीं।"[10] सोशल मिडिया के किसी प्लेटफॉर्म पर यदि हमारा चिर–परिचित कोई पोस्ट शेयर करता है तो हम स्वाभाविक रूप से उस पर विश्वास कर बैठते हैं। यही कारण है कि भारत जैसे देश में सोशल मिडिया पर फैलायी जा रही अफवाहें समाज में असानी से फैल जाती है। देश में अब तक जो मॉब लिंचिंग की घटनाएँ हुईं, यदि सोशल मिडिया न होता तो वे घटनाएँ न घटित होती। ''मीडिया रिर्पोट के अनुसार जनवरी 2010 से 2017 तक गोहत्या और बीफ के मामलों को लेकर देश के राज्यों में 63 घटनाएँ हुई जिसमें 28 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया और 164 लोग घायल हुए।"[11] सितम्बर, 2015 में उत्तर प्रदेश के दादरी में शाम के समय अफवाह फैली की मोहम्मद अखलाक और उसके परिवार ने गौमांस खाया है। इसके बाद लगभग 100 लोगों की भीड़ ने रात के 10 बजे अखलाक के घर पर हमला कर दिया। उस समय परिवार के सभी सदस्य सोने जा रहे थे। भीड़ के हमले में 52 वर्षीय अखलाक की मौत हो गयी जबकि उसका बेटा दानिश बुरी तरह घायल हो गया। इसी तरह 27 अगस्त, 2019 को गाजियाबाद में अपने पोते के साथ शॉपिंग करने आयी एक महिला को बच्चा चोर होने की अफवाह की वजह से पीट दिया गया। 16 अप्रैल, 2020 को महाराष्ट्र के पालघर में बच्चा चोरी की अफवाह के कारण असंख्य लोगों की भीड़ ने दो साधुओं व उनके ड्राइवर की पीट–पीटकर हत्या कर दी। मॉब लिंचिग की ऐसी असंख्य दुखद घटनाएँ हैं जिनके उदाहरण समाचार–पत्रों व इंटरनेट पर देखे जा सकते है।

डिजिटल युग में जहाँ अनेक प्रकार की सुविधाएँ हैं वहीं एक समस्या हैकर्स की भी है जो लोगों के बैंक खातों में सेंध लगाने के साथ–साथ सरकारी व गैर सरकारी कार्यलयों, कम्पनियों व ग्राहकों की निजी जानकारियाँ चुरा लेते हैं जिसके लिये फिशिंग, मेल वेयर, मोबाइल ऐप्स, स्मिशिंग और असुरक्षित नेटवर्क आदि उनके साधन हैं। 11 फरवरी, 2023 को inc**42**-com. में चेतन थाथू के लेखानुसार इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना और प्रौद्योगिक राज्य मन्त्री राजीव चन्द्रशेखर ने 10 फरवरी, 2023 को सूचित किया कि भारत में 2022 में 13.91 लाख साइबर सुरक्षा घटनाएं दर्ज की गयी। business-standeard-com के अनुसार 2023 के प्रथम छः महीनों में केन्द्र व राज्य सरकारों की 36 बेबसाइटस को हैक किया गया। abp न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार डार्कवेब के जरिये 82 करोड़ भारतीयों का डाटा हैक हो चुका है। जिसमें लोगों के आधार कार्ड, पासपोर्ट, क्रेडिट कार्ड आदि की जानकारियाँ भी शामिल हैं। इन जानकारियों को हासिल करने के पश्चात् स्कैमर किसी की सिम की दूसरी कॉपी बनाकर उस पर ओटीपी ले सकते हैं। इसे सिम स्वैपिंग कहा जाता है। इससे बचने के लिये ऐप परिमिशन, किसी भी लिंक पर क्लिक करना व कॉल के बहकावे में आने से बचना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात् (Artifcial Intelligence) का आज शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रक्षा, आपदा प्रबंधन आदि क्षेत्रों में व्यापक इस्तेमाल होने लगा है। यद्यपि इसके अनेक लाभ हो सकते है परन्तु इससे सबसे बड़ा खतरा मानव अस्तित्व को ही है। ''बिल गेट्स का मानना है कि यदि मनुष्य अपने से बेहतर सोचने–समझने वाली मशीन बना लेगा तो वह मनुष्य के अस्तिव के लिये ही सबसे बड़ा खतरा बन सकती है।"[12] वर्तमान युग में स्वचालित कारें, गाड़ियाँ, हथियार व उन्नत रोबोट इसी AI टेक्नोलॉजी से लैस हैं। जब साइबर सुरक्षा के खतरे दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं तो ऐसी स्थिति में हैकर्स इनके सिस्टम को भी हैक कर सकते हैं और इनके द्वारा अवांछित गतिविधियों को अंजाम दे सकते हैं। इसके साथ ही AI के द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों और ज्ञान की शुद्धता, निष्पक्षता और पूर्वाग्रहहीनता का प्रश्न भी उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त अधिकतर विद्यार्थी अपने लेखन व समस्या के समाधान के लिये ChatGPT के AI टूल का प्रयोग करते हैं जो उनकी सोचने–समझने, जूझने व विश्लेषण करने की क्षमता को कुन्द कर रहा है।

इंटरनेट ने लोगों को समाज से अलग करना शुरू कर दिया है। आज लोग एक–दूसरे के साथ समय बिताने के स्थान पर इंटरनेट पर ही ज्यादा समय गुजारते हैं। यहाँ तक की परिवार के सदस्य भी अपना अधिक समय अपने मोबाइल पर ही बीता रहे हैं। युवा वर्ग को तो मोबाइल और इंटरनेट का नशा–सा हो गया है जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी शिक्षा व परीक्षा में पिछड़ते जा रहे हैं। यही नहीं आजकल

के माता–पिता भी अपने एक–दो वर्षीय बालक के हाथों में मोबाइल या टैब पकड़ा देते हैं। वे शायद नहीं जानते कि वे स्वयं ही अपने बच्चे को मोबाइल की लत लगा रहे हैं। हर देश का भविष्य उसकी आने वाली पीढ़ी होती है। हम सब जानते हैं कि हमारी नई पीढ़ी अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए किस प्रकार के प्रयत्न कर रही है। वर्तमान में प्रत्येक किशोर और युवा के हाथ में महँगा फोन है। सन् 2020 के दौरान कोविड–19 महामारी के दौरान परिस्थितिवश अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी शिक्षा के लिये मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया से जोड़ दिया गया जिसके परिणामस्वरूप निम्न मध्यवर्गीय परिवारों को भी अपने बच्चों के लिए स्मार्ट फोन खरीदना पड़ा। अब तक जो बच्चे इस चमत्कारी दुनिया के प्रभावों से अछूते थे वे भी अब कुछ घंटों की पढ़ाई के बाद, फोन को एक तरफ रखने के बजाय इस डिजिटल दुनिया में विचरण करने लगे हैं। आज के समय में एक बड़ा विद्यार्थी वर्ग मोबाइल और इंटरनेट के कारण शिक्षा से दूर होता जा रहा है। इससे समाजीकरण की प्रक्रिया भी अवरूद्ध हो रही है।

सारांश

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में सोशल मिडिया और उसके उपकरण जहाँ हमारे रोजमर्रा के जीवन के लिये आवश्यक है वहीं इसके उपयोग में सावधानी के साथ–साथ संयमित व जागरूक व्यवहार अति आवश्यक है। यद्यपि इसकी आवश्यकता व उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता किन्तु यदि इसका उपयोग हमारे मानसिक स्वास्थ्य व मानवीय सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है तो गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनसोशल नेटवर्क, दिलीप मंडल एवं गीता यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2021, पृ. सं. – 8 (भूमिका)
2. वही, पृ. सं0 – 7 (भूमिका)
3. केवल जे. कुमार, हिन्दी अनुवादक प्रो0 अमिताभ श्रीवास्तव, भारत में जनसंचार, जयको पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई, पृष्ठ संख्या – 481
4. डॉ. कुमार गौरव मिश्रा (सम्पादक), जनकृति, अंक 72–73, अप्रैल–मई 2021, दिव्या शर्मा, डिजिटल दुनिया और युवा पीढ़ी, (शोध पत्र), पृष्ठ संख्या – 103
5. केवल जे. कुमार, हिन्दी अनुवादक प्रो. अमिताभ श्रीवास्तव, भारत में जनसंचार, पूर्वोक्त, पृ. सं. – 402
6. डॉ. दयानन्द गौतम, मीडियाः साहित्य, समाज एवं सरोकार, (नीलम कुमारी, भारतीय राजनैतिक प्रणाली में मीडिया का बदलता स्वरूप), अक्षरधाम प्रकाशन, कैथल (हरियाणा), पृष्ठ संख्या – 143
7. केवल जे. कुमार, हिन्दी अनुवादक प्रो. अमिताभ श्रीवास्तव, भारत में जनसंचार, पूर्वोक्त, पृष्ठ संख्या 479–480
8. अनसोशल नेटवर्क, दिलीप मंडल एवं गीता यादव, राजकमल प्रकाशन, पूर्वोक्त, पृ. सं. – 28
9. www.livehindustan.com/lifestyle/story-scientists-warns-tell-the-dangerous-effects- of social-media-addiction-4863080
10. अनसोशल नेटवर्क, दिलीप मंडल एवं गीता यादव, राजकमल प्रकाशन पूर्वोक्त, पृ. सं. – 44
11. www.aajtak.in
12. www.drishtias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/adverse-consequences-of-ai